

संघर्ष ही सफलता है!

लेखक
उजाला त्रिपाठी

BFC PUBLICATIONS



BFC PUBLICATIONS



प्रकाशक:

BFC Publications Private Limited
CP -61, Viraj Khand, Gomti Nagar,
Lucknow – 226010

ISBN:

कॉपीराइट (©) – **उजाला त्रिपाठी** (2021)

सभी अधिकार सुरक्षित।

प्रकाशक की अनुमति के बिना इस पुस्तक के किसी भी भाग की न तो प्रतिलिपि बनाई जा सकती है, न पुनरुत्पादन किया जा सकता है और न ही फोटोकॉपी और रिकॉर्डिंग सहित किसी भी माध्यम से अथवा किसी भी माध्यम में, किसी भी रूप में प्रेषित या पुनःप्राप्ति के उद्देश्य से संरक्षित किया जा सकता है। कोई भी व्यक्ति जो इस कार्य के प्रकाशन के संबंध में कोई भी अनाधिकृत कार्य करता है, क्षति के लिए कानूनी कार्यवाही और नागरिक दावों के लिए उत्तरदायी हो सकता है।

इस पुस्तक में व्यक्त किए गए विचार और प्रदान की गई सामग्री पूरी तरह से लेखक की है और प्रकाशक द्वारा सद्भाव में प्रस्तुत की गई है। सभी नाम, स्थान, घटनाएं और घटनाक्रम या तो लेखक की कल्पना की उपज हैं या काल्पनिक रूप से उपयोग की गई हैं। कोई भी समानता विशुद्ध रूप से संयोग है। लेखक और प्रकाशक इस पुस्तक की सामग्री के आधार पर पाठक द्वारा की गई किसी भी कार्यवाही के लिए जिम्मेदार नहीं होंगे। इस कार्य का उद्देश्य किसी भी धर्म, वर्ग, संप्रदाय, क्षेत्र, राष्ट्रीयता या लिंग की भावना को ठेस पहुंचाना नहीं है।

समर्पण

ये पुस्तक मेरे माँ-पापा को समर्पित है !
क्योंकि मेरे हर संघर्ष से सफलता तक मैंने उनको
अपने साथ खड़ा पाया है !

प्रस्तावना

मैंने अपनी लेखनी के माध्यम से अपने जीवन के संघर्ष, लिखने के प्रति मेरी रुचि, अपने जीवन के खास अनुभव और मेरे द्वारा लिखी कुछ रचनाओं को सम्मिलित किया है !

ये पुस्तक मेरे अब तक के अनुभव पे लिखित है ! मेरे हिसाब से लिखना एक ऐसी कला है जो आपके विचारों को पाठकों तक पहुंचाती है! मेरे प्रिय पाठकों अनुभव हमेशा एक बेहतर सीख देते हैं ! फिर परिस्थितियां कैसी भी हों हम हर संघर्ष को पार कर सफलता तक पहुंच ही जाते हैं! ये पुस्तक "संघर्ष ही सफलता" एक हौसले की कहानी है !!

लेखक की कलम से

सवाल सबका एक ही है ! इतने संघर्ष क्यों हैं जीवन में ! क्यों ईश्वर ने मेरा मुसीबतों का एक रिश्ता बनाया ! आखिर मेरे साथ ही ऐसा क्यों हुआ ?

पर अगर संघर्ष न हो तो उस सफलता के क्या मायने हैं ! उस हर चीज के मायने कम हैं जो हमें बड़ी असानी से मिली हो ! बिना मेहनत के हम सफल हो भी गए तो हम बड़े इतिहास कैसे लिखेंगे ! क्योंकि एक अनुभव की कमी वो तो बनी रहेगी ! वहीं अगर संघर्ष के साथ अपने जीवन में बढ़ें ! और अपना वक्त उस ख्वाब को दे दिया जिसे हमें साकार करना ! तो सफलता हमारी पहचान बनेगी ! जितने भी कीमती हीरे भारत में जन्मे उन सबने लाख मुश्किल के बाद भी जीवन को नया उद्देश्य दिया ! तो फिर हम क्यों डर रहे !

मैं समझ गयी आप संघर्ष से डरते इसलिये कि कहीं असफल हो गए तो ! मतलब असफलता ने आपको रोक कर रखा ! पर ऐसे कदम नहीं बढ़ाने से भी तो आप असफल हुए ! तो फिर क्यों संघर्ष किया जाये जीवन में ! आपका संघर्ष ही आपकी सफलता बन जायेगी ! क्योंकि आप ने कड़ी मेहनत की ! कठिन रास्तों पे चलकर जब मार्ग निकाल लिया तो मांजिल तक पहुंचना कौन सी बड़ी बात है !!

अनुक्रमणिका

क्र. सं.	शीर्षक	पृष्ठ सं.
	मेरे जीवन के अनुभव	
1.	बचपन की डोर	09
2.	कॉलेज का सफर	12
3.	मेरी internship	16
4.	मेरी अनोखी दोस्त	20
5.	मेरे प्रेरणास्त्रोत लोग : गुरु	22
6.	परिवार का सहयोग	25
7.	मेरी पहली नौकरी का संघर्ष	27
8.	मेरी लेखनी का पहला प्रकाश- सौरव गांगुली	29
9.	डर- एक भय की कहानी	32
10.	जूता चुरायी की अनोखी रसम	34
11.	बहन की विदाई	36
12.	आंसू - जज्बातों का बिखरना	38
13.	मेरी लेखनी को निखारने की इच्छा	40
14.	एक शहीद की आवाज	42
15.	कुछ महत्वपूर्ण बातें	44
	मेरी रचना	
16.	लिखना- मेरी चाहत	46

17.	बेटियां	48
18.	माँ	49
19.	मेरा आईना	50
20.	ज़िन्दगी एक किताब है	51
21.	स्त्री-एक रचना	52
22.	आवाजों के जंगल में	54
23.	कागज और कलम	55
24.	कविता के साज से सजी मैं	56
25.	रिश्ते	57

1.

बचपन की डोर

बचपन ज़िन्दगी की वो डोर है, जो वक्त के साथ छूट जाती है ! उसके बीत जाने पे उसकी याद बड़ी आती है !!

एक संयुक्त परिवार में जन्मी, एक किरदार और एक कहानी !! हाँ तो मैं हुए एक तीजी छोरी के रूप में ! एक मध्यम वर्ग परिवार, जहाँ हर दिन लगा जैसे कोई त्योहार ! तकरार होती बहुत पर प्यार भी दिखता बेमिसाल !! स्कूल से लौट कर माँ के हाथों का गर्म खाना शाम होते ही भाई - बहनों के साथ खेलने के लिए निकल जाना ! पर दोस्त शायद एक या दो ही रहे ! क्योंकि हर किसी के साथ खुद को सहज महसूस करा पाना ये मुश्किल होता मेरे लिए !!

एक ऐसी लड़की जो हिचकिचाहट से भरी और इसलिये कम बोलने वाली ! सन् 2005 की वो बात, जहाँ बच्चों के परिणाम घोषित करते समय स्कूल के अध्यापकों और अभिभावकों के बीच बातचीत का दिन होता ! एक अध्यापिका बोलते हुए आपकी लड़की पढाई में तो ठीक है, पर और बच्चों की तरह बात करते या कभी मस्ती करते देखा नहीं ! क्या वो घर में भी ऐसी चुपचाप रहती है !

माँ -पापा : नहीं तो घर पे तो बोलती है !

अध्यापिका : अच्छा फिर भी यही सलाह कि आप बात कीजिये थोड़ी असाधारण है।

कहीं ना कहीं उस दिन बाद थोड़े बदलाव लाये मैंने खुद के अन्दर ! और लोगों से थोड़ा बातचीत करने की कोशिश की ! मैं खुद को एक आत्मविश्वास के साथ खड़ा करने की कोशिश ! बचपन के उस पड़ाव में सपने शोर मचाने लगे ! अपनी सबसे बड़ी बहन को देखते मैंने मेडिकल विभाग में काम करना निश्चय कर लिया ! वक्त की दूसरी ओर कुछ लिखने की चाह इतनी ज्यादा थी ! बस ख्यालों को उस वक्त कागज पे उतारने लगी ! और पता ना लगे तो लिखे हुए कोई और नाम दे देती ! घर वाले उस नाम को खोजते ये सोचते कि ये लिखता कौन है !! एक बार उन्हें पता चल गया कि उनकी बेटी को लिखने का प्यारा सा शौक है और माँ बोलती वाह बेटा कितना अच्छा लिखा है तुमने !!

ज़िन्दगी मेरी इम्तिहानों से भरी रही, बचपन से इम्तिहानों का मतलब यही होता है कि अध्यापक पाठ्यक्रम को समझाकर फिर पूछते कि हमने कितना सीखा पाठ से !! इम्तिहान तो वो भी जो ज़िन्दगी की परिस्थितियों में कुछ सिखा दे !!

सन् 2009 मेरा निश्चय साफ था ! कि मुझे क्या पढ़ना है ! तो मेरी एक अध्यापिका मुझसे बोलते हुए विचार कर लो, कहीं ऐसा ना हो कि पछतावे के अलावा कुछ न बचे ! पर मेरा निश्चय अटल था ! वक्त के साथ सही साबित हुआ ! पर कभी चेहरे बदलते सवाल नहीं तो ऐसा ही कोई 12 वी में फिर वही सवाल ! और विश्वास तब भी अटल ! और 60 प्रतिशत से उपर ही हो ! जिससे कि मैं अपने स्नातक स्तर की पढ़ाई अपने हिसाब से कर सकूँ !! 72 प्रतिशत के साथ मैं सफल हुई !!

मेरा निश्चय अटल इसलिये रहा क्योंकि मेरे माँ-पापा दोस्त जैसे रहे ! जिनसे परेशानी का हर भाग मैं साझा कर पाती, ऐसी बहनें पहले से ही थीं जिन्होंने माँ-पापा का नाम रोशन किया ! जिस घर के बड़े बच्चे अच्छे निकल जाते वहां छोटों को भी रास्ता मिल जाता है !!

बचपन में प्यार, विश्वास, मेहनत का बीज बोया जाता है ! बचपन के शौक वक्त से पहले पूरे हुए और साथ ही सिखाया गया कि हमें ज़िन्दगी में हर तरह की परिस्थितियां मिलेंगी ! हर दिन अगर पनीर की चाह करने लगे तो गलत है ! ज़िन्दगी में बड़ों का सम्मान, लोगों की मदद करते रहो !! मन में विश्वास रखो कि हम हारेंगे नहीं !! हमें सिखाया गया कि सुकून उन खिलौनों की दुकानों में नहीं बल्कि भाई-बहन के साथ बिताये गए लम्हों में है !!

एक मध्यम वर्ग परिवार सिखाता है कि जेब में पैसे भले ही कम हों, पर रिश्तों में प्यार बेमिसाल हो !!

2.

कॉलेज का सफर

ये सफर अक्सर आसान नहीं होता ! जहाँ राह दिखाने वाले और राह भटकाने वाले दोनों ही नजर आते हैं! आज से करीब पांच साल पहले प्रयागराज शहर "इलाहाबाद" के नाम से जाना जाता था ! जहाँ मेरा कॉलेज था !! ये मेरे घर "कानपुर " से कुछ 200 किलोमीटर की दूरी पे था !!

अंजान राह पर चलने का डर जितना मन में था !! उतना ये भी कि ये सफर तय करना मेरे लिए कितना ज़रूरी था !! मैं अपने मन को समझाते हुए जो होगा सब ठीक होगा !! आँखों पे नए सपनों का कवर चढ़ाकर मैं चल पड़ी थी एक नयी जगह जहाँ आसमां भी लगा नया हाँ तो जब तक माँ मेरे साथ रुकी, तब तक अंजान चेहरे भी अपने नजर आ रहे थे ! मेरे ऊपर प्यार की बारिश लुटा रहे थे ! पर माँ के घर जाने के बाद सब बदले नजर आये ! अंजान शहर शब्दों के तीखे वार दिल को छेद करते जा रहे थे ! और बंद कमरों में आंसू बिना भाव के निकलते जा रहे थे !

पर एक बात जो उस वक्त समझ आयी थी कि हम अपने जीवन में कितने बड़े क्यों ना हो जायें ! पर अपने माँ-बाप से बड़े नहीं होते !! वो एक फ़ोन कॉल और उन्होंने घर से सब संभाल लिया ! वक्त के साथ दोस्त भी बनते चले गए ! पर मेरा मानना यही रहा कि किसी से बात करने या दोस्ती निभाने के लिए अपने उसूलों को तोड़ना गलत है ! मैं जैसी भी

ठीक हूं ! मुझे वो काम नहीं करना जिसके लिए मेरा अन्तर्मन तैयार ना हो ! फिर वो दोस्तों के साथ कहीं दूर जाना क्यों ना हो !! मैं अजीब हूं या दोस्तों के हिसाब से थोड़ी पागल !! धीरे-धीरे वक्त भी गुजरता गया ! और वक्त के साथ लोग ऐसे मिले जो समझने लगे !! और मैं ज्यादातर समय खुद के करीब बिताती ! मन में एक नया आत्मविश्वास जगाना और कुछ नयी चीजों का अनुभव वहीं से किया !!

जब भी कॉलेज का ज़िक्र करूं तो जयपुर की यात्रा को कैसे भूल सकती हूं !! ये यात्रा हमारे कॉलेज में हमारी विदाई समारोह के ठीक पहले की थी ! जहाँ हमारी मैम हमें ठीक वैसे समझा रही थीं ! जैसे किसी छोटे बच्चे को समझाया जाता है ! कोई भी शैतानी मत करना, सामान का ध्यान रखना ! और हमारी प्रतिक्रिया भी ठीक वैसे ही जैसे कि क्लास रूम में कुछ समझ आये या ना आये छात्र की yes मैम की आवाज बड़ी तीव्र निकलती है !!

अगले दिन हमारी ट्रेन स्टेशन पर, जहाँ सब मित्र अपने-अपने सामानों के साथ एकत्रित हुए और उस वक्त हम सबको मस्ती के अलावा और कुछ नहीं सूझ रहा था ! तो अब बारी थी अपनी-अपनी सीट की ! तो मेरे दोस्तों की सीट के सामने एक अंकल जी की सीट थी ! और पीछे मेरी !! पहले तो हमने अंकल जी से विनम्र निवेदन किया ! पर होते हैं कुछ लोग किसी की भी बात ना मानने वाले ! तो हम भी कहाँ कुछ कम थे !! हम सब अपने स्वरों के संगीत से उस रात को रोमांचक बना रहे थे और वो सामने वाले अंकल नींद तो वो भी गंवा रहे थे !!

रात के 12 बज चुके थे !! हमारी मैम अपने एसी वाले डिब्बे को छोड़कर हमारे स्लीपर वाले डिब्बे में प्रवेश करती हुई और अब थोड़ा ऊंचा स्वर क्या हो रहा यहाँ ! सब अपनी अपनी सीट पे जाकर सो जाओ !! और इतना बोलकर वापसी करते हुए !! हम सब

अपनी-अपनी सीट पर ! पर ये शांति सिर्फ 5 मिनट की थी !! मेरी एक दोस्त स्नेहा मेरी सीट पर, सुनो सो गयी हो क्या ?

मैं : नहीं तो बताओ

स्नेहा : अच्छा सुनो मुझे कॉल करो !

मैं : क्यों क्या हुआ, कॉल क्यों करनी तुम्हें !

स्नेहा : ऐसे ही ! हम दोनों फोन से बात करें, थोड़ा वक्त ही कट जायेगा !!

मैं : अजीब पागलपन है, सामने तो बैठी हो तुम मेरे फिर फोन से बात क्यों ! इतने में मेरी पीछे वाली सीट से कुछ आवाजें आ रही थीं, जहाँ हमारी क्लास के कुछ लड़के ताश के पत्तों में खोये थे !! कोई भी खेल जुआ का रूप तब लेता जब उसकी कीमत लगी हो, तो खेल सिर्फ आनन्द के लिए खेला जा रहा था !!

मैं और स्नेहा हमें भी खेलना है ! एक दोस्त का सवाल खेलना आता है ना तुम्हें, ये सवाल भी थोड़ा जायज था ! क्योंकि सबकी नजरों में मेरी छवि सीधी और साधारण लड़की की ही थी ! इतने में स्नेहा बोलते हुए कि मैंने उसे ताश खेलना सिखाया है !!

अब रात के 3 बज चुके थे ! और ताश की गड्डी उस ट्रेन के डिब्बे पे चलती जा रही थी !! और थोड़ी देर बाद खेल समाप्ती की ओर, हल्की सी सुबह का एहसास ! और इतने में नाश्ता हमारी आँखों के सामने ! पर देखने में जो सही ना लगे उसे खाया कैसे जाये ! तो हमने वो थाली चीखी भी नहीं !!

सुबह के पांच बजे मैं और स्नेहा एक कप चाय की प्याली, और दो बिसकिट के साथ प्यारी सी सुबह का स्वागत किया ! वैसे ट्रेन भी कहाँ कुछ कम थी, वो लेट थी ! जैसे तैसे

हम दिन के 2 बजे जयपुर स्टेशन पर ! और फिर हम सब अपने होटल पर ! और वहाँ जल्दी नाश्ता करके हमें घूमने निकलना था !! इतने लंबे सफर के बाद थकावट की एक झलक भी हमारे अन्दर नहीं दिखी थी ! उस बस में सबके अतरंगी अन्दाज देखकर सफर और मजेदार हो गया !!

वो तीन दिन का सफर जब हर दोस्त ने खुले अन्दाज में खूब आनन्द उठाया ! वो जलमहल में राजस्थानी पोशाक पहनकर सब अलग-अलग रंगों में दिख रहे थे ! चौकीधानी ऐसी जगह थी जो हम चाह भी ले तो भूल नहीं सकते ! चाहे वो खाने का स्वाद हो, या परोसने का अन्दाज !! वहाँ की वो याद जो अभी तक ताजा है ! वो याद जो अभी तक ! हमारे कमरे के दरवाजों में एक आवाज आती थी और दरवाजा खोलने पर कोई दिखाई नहीं देता ! और वो महज हवा का झोंका प्रतीत नहीं हो रहा था !! वैसे सफर खत्म होने से पहले पता चल गया कि ये हमारे क्लास के कुछ लड़कों की शैतानी थी !

वैसे कुछ यादें तो उस विदाई समारोह की भी थी जहाँ हर कोई चमकते सितारे की तरह नजर आ रहा था ! हमारे क्लास के कवि **कहे** जाने वाले ऋषभ के दो शब्द बहुत बेहतरीन थे ! हम आपस में कितनी बार लड़े और कितनी बार खेले थे ! पर अब आगे आने वाले समय में अफसाने होंगे, तो अलग होने का थोड़ा दुख तो बनता है ! और उस नाव की तैराक भी उतनी ही मजेदार थी ! प्रयागराज शहर का सफर संघर्ष भरा तो था ! पर **शायद** इतना बुरा भी नहीं था ! इस शहर की यादों को आज भी दिल के कोने में संभाले रखा है !!



3.

मेरी INTRNSHIP

मेरे एक हाथ में सपनों की ऊंची उड़ान और दूसरे हाथों में डर ! दोनों हाथों को लेकर तय किया एक अंजान शहर का सफर ! अंजान शहर मेरा रिश्ता !!

ये ऊंची इमारतों से ज्यादा उस शहर के लोग कैसे हैं ये मायने रखता है ! और अगर किसी शहर में लोग अच्छे ना मिले, तो बस दिन कितना भी खराब क्यों ना हो माँ के एक फ़ोन कॉल का इंतजार रहता है ! ये बातें मुझे प्रयागराज शहर के अनुभव से सीखने को मिली थी !!

और रही बात दिल्ली की तो खाने के स्वाद से जलवायु तक सब कुछ बहुत अलग लग रहा था ! वैसे ये सबके सपनों का शहर था ! पर मेरा दिल तो घर की यादों को ही समेट रहा था ! यहाँ से घर का रास्ता इतना भी पास नहीं था कि जब चाहूँ चली जाऊँ ! तो मन को शांत कर वहाँ के हिसाब से खुद को ढालना था ! पर इस शहर के लोग इतने भी बुरे नहीं थे ! अंजानों के रूप में अपनों की झलक दिखने लगे अंजान शहर में यही काफी हैं !! एक ऐसी लड़की मुझे दोस्त के रूप में मिली जो शायद पहली बार घर छोड़ कर आयी !! उसकी छोटी-छोटी आँखों में बड़े-बड़े आंसू दिखे मुझे ! उसका परिचय इतना ही है कि वो धीमी सी आवाज अलग भाषा ! और हर काम में तेज उस शहर की मेरी पहली दोस्त !! गुरु का सम्मान करना तो बचपन से सिखाया जाता है सख्त और अनुशासित

लोग ही मुझे अपनी जिन्दगी में पसंद आते हैं !! क्योंकि हंसी मजाक और दोनों का अपना-अपना सही वक्त होता है ! दोनों काम अपने वक्त में किये जाये तो ही बेहतर है !!

प्रेरणादायक शब्दों को एक अलग संग्रहालय था वहां ! बस फर्क इतना था कि शब्द किताबों से नहीं किरदारों से निकल रहे थे !

ब्रिज मोहन सर : हमें अपने हर कार्य का क्यों पता होना चाहिए, और हम क्या हैं क्या नहीं लोगों से ज्यादा ये बातें खुद पे निर्भर होना चाहिए !!

गौतम सर : हमें अपनी जिन्दगी में हर काम को सीखना आना चाहिए !!

नीति मैम : हम अपने कामों के लिए दूसरों पर निर्भर नहीं हो सकते !!

संदीप सर : यहाँ कोई भी बहाने सुनने नहीं बैठा है ! किसी समस्या का हल रौना नहीं है !

प्रेरित करने वाले शब्द आपको जब भी मिले, तो ये कलम से अपने दिमाग में लिख लेने चाहिए ! क्योंकि ये शब्द आगे आने वाले जीवन में आपको मार्ग दिखाएंगे !!

वैसे ऐसा भी नहीं कि किसी शहर का हिस्सा सिर्फ अच्छे लोग होते ! ऐसे लोग भी मिले जिनकी बातें मेरा मनोबल गिराने के लिए होती थी, पर उन बातों से ज्यादा ज़रूरी मेरे लिए मेरा काम होता ! क्योंकि कुछ लोगों को शब्दों से जवाब देना अपने कीमती समय व्यर्थ करने जैसा है ! अंजान शहर में अंजान लोगों से कुछ रिश्ते भी बने ! एक दिन तो मेरा डर और उस पर मिली एक गुरु की फटकार ! वैसे एक डर था मेट्रो में अकेले सफर करने का !!

मैं और मेरे साथ रहने वाली दोस्त, हम दोनों का कानपुर जाना तय हुआ ! इतने दिन बाद घर जाने का उत्साह अलग था ! जहाँ मैं अपने सामान को बांध रही थी वहीं मेरी दोस्त जो अलग जगह काम करती थी ! उसकी छुट्टी मान्य नहीं की जा रही थी ! मतलब अब अकेले जाने का डर ! और डर का साझा मैंने lab में किया ! तो प्रतिक्रिया कुछ ऐसी रही !

संदीप सर : हाँ तो बता कितनी पढ़ी-लिखी है तू ? 10th पास किया या फिर 12th पास किया है तूने !

मैं : बिल्कुल धीमा सा स्वर graduation पूरा हुआ है
संदीप सर : मेट्रो में enter और exit लिखा होता ये पढ़ना आता है या नहीं ! अब अपने डर को खत्म कर ! और उस दिन अकेले सफर करने का डर भी खत्म हो गया !!

वो cafeteria की बात : एक जगह ऐसी जहाँ खाने के स्वाद से अच्छी और बुरी हर बात पर एक चर्चा होती थी ! जहाँ विचारों को खुले मन से एक टेबल पे रख देते थे ! मानो दोस्तों का एक छोटा सा समूह वहाँ नजर आता था ! उस जगह के लिए वक्त निकल आता था !

और वो दीवारें रोज ना जाने कितने किस्से सुनती हैं कितनी बातों का एक समां बांध देती हैं !! चाय की प्याली में तो हर कोई रम जाता ! और खाने के बाद वो किसी के बने आलू के परांठे हो, ये फिर वो मीठी सी खुशबू वाली सेवई हो ! सच बोलूं तो हमारी खुशी से, हमारी नाराजगी तक वो cafeteria की दीवारें सब सुन लेती थीं !! और ये वो जगह है जहाँ सब अपने मोबाइल में घुस दूर तक की दुनिया की सैर कर आते !! खट्टी मीठी बहुत सारी यादों के साथ वो जगह ऐसी थी जो दिल से भाती थी ! चाहे वो अदरक वाली चाय

हो या किसी की राय हो !! या फिर मेरे आखरी दिन पे मेरे लिए एक छोटी सी party हो !! यादें जो बुनी वहां से आज भी बहुत याद आती हैं !!

संघर्ष और सफलता के बीच का अनुभव बुरे के साथ, बेहद अच्छा भी होता !! क्योंकि जो बातें मैंने उस वक्त सीखी वो मुझे अपनी ज़िन्दगी को निखारने में काम में आयी ! जब कोई ये बोले कि मैं चाहता हूं कि तुझे बुरा लगे ताकि तू खुद की और बेहतर पहचान बना पाये ! और तेरे संघर्ष को लोग तभी पहचानेंगे जब तू सफलता के आयाम छू लेगी !!

4.

मेरी अनोखी दोस्त

वर्षा क्या कहूँ थोड़ी पागल है ! मस्त मौला अनोखा अन्दाज ! बोलती इतना धीमा कि कुछ समझ नहीं आता कि ये क्या बोल गयी ! मेरी हरियानवी दोस्त !

हमारी दोस्ती हो भी तो कैसे ! जहाँ चाय में मुझे सुकून नजर आता तो उसे प्याली भी पसंद नहीं थी ! पर वक्त के साथ हम दोनों ही एक-दूसरे को समझने लगे ! अब चाय के दो प्याले और खाने के दो कौर ही सही, पर एक-दूसरे का साथ हमें भाने लगा ! हमारा वो अड्डा जिसकी सुनहरी यादें आज भी चेहरे पे मुस्कान ला देती हैं ! वो कोल्ड coffee जिसमें हमारी जान बसती थी ! और गाड़ी सिर्फ एक स्टेशन पर अटकती थी ! खुद की पसंद से ज्यादा एक-दूसरे की पसंद मायने रखती थी ! फिर चलो एक प्लेट momos ही ले लेते हैं ! जहाँ मेरा मकसद नौकरी पाना, तो वहीं उसकी मांजिल मेरे चेहरे पे मुस्कान लाना ! हम दोनों की राहें भी वैसे घुल जाती जैसे चाय में एक चम्मच शक्कर !

सबकी ज़िन्दगी में एक ऐसा वक्त आता है जब सब कुछ बिखरा नज़र आता है ! विवेक भी खो जाता है ! मेरी ज़िन्दगी में ऐसा वक्त आया और बिन कुछ कहे उसने मेरा साथ निभाया ! उस वक्त से एक ऐसी दोस्त जिसने सच्ची दोस्ती निभायी ! उसके साथ बिताया गया हर लम्हा उस यादगार मौसम की तरह जिसकी यादें सालों बाद भी आती हैं ! वो

हमारी आखिरी शाम जब शब्दों में खामोशी और आँखों में नमी लिए एक-दूसरे के साथ कदम बढ़ा रहे थे ! एक प्यारे से वादे के साथ हम जल्द ही मिलेंगे !

बेशक हमारी दोस्ती अलग शहरों की अलग जुबानी है ! फिर भी मशहूर हमारी हर कहानी है !!

5.

मेरे प्रेरणास्त्रोत लोग : गुरु

परिवार का साथ तो हमेशा रहा ! ज़िन्दगी में आगे बढ़ते-बढ़ते कुछ ऐसे शख्स मिले जिनके अक्स राह दिखाते रहे ! गुरु वो होते जो कुछ किताबी अक्षर ही नहीं ज़िन्दगी का मार्ग भी दिखा देते हैं !!

संध्या मैम : गलती होना गलत नहीं है, उसका पछतावा न होना ये गलत है ! शशांक भाई : जब ज़िन्दगी में कोई भी परेशानी आये तो अगर हम शांत मन से उसके हल के बारे में सोचे तो परेशानी खत्म की जा सकती ! "सपने एवं इच्छायें पर्याप्त बड़े हों तो परिस्थितियों से फर्क नहीं पड़ता" ऐबिनेज़र सर : हमें अपने जीवन को किस प्रकार ढालना है, ये हमें खुद तय करना है !

गुरु की फटकार उनके आशीर्वाद से कम नहीं होती है ! ऐसे गुरु जिनका मकसद ये कि तुम ऊंचे उड़ो ! वैसे ही थे !

संदीप सर : ज़िन्दगी का उद्देश्य मुझे एक बात समझाना मैं नौकरी करूं ! अगर नौकरी नहीं की ! तो ये पढ़ाई भी व्यर्थ है ! माँ-पापा ने जो पैसे लगाये उसे भी व्यर्थ कर दिया हमने ! मैं अपने सपने पे सबसे ज्यादा फोकस करूं ! हर समस्या का हल आंसू बहाना नहीं होता !

मानसी मैम : जिनसे कुछ कहने से पहले डर होता क्योंकि वो थोड़ी सख्त और हेड हैं !
उनका अनुशासनित और सख्त होना मुझे पसंद भी आता ! और ये मेरी जिन्दगी को नयी राह भी दिखाता !

गौतम सर : सीख देना और सिखाना दोनों में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभायी ! मेरे डर को खत्म करने की कोशिश !

कई बीमारी ऐसी होती हैं जिसमें हमारे हाथ कांपते हैं ! सामने वाले की नज़र में एक डर होता ! एक ऐसी आनुवांशिक बीमारी ! जिसका सामना मैंने अपने हर उम्र के पड़ाव में किया ! तो फिर गौतम सर से मेरा एक सवाल ! मेरे हाथ बहुत कांपते हैं मैं ये काम कैसे कर पाऊंगी !

गौतम सर : बुजुर्गों के भी तो हाथ कांपते हैं तो उनका खाना मुंह में जाता या नाक पर मैं : मुंह में जाता है !

गौतम सर : फिर ! जो काम हमें करना है वो हम कर ही लेंगे !

ब्रिज मोहन सर : काम कराने के अन्दाज से, हर चीज सिखाने तक एक बेहतरीन technician ! हर बात की समझ ! वो रेशम के धागे की डोर वाला विश्वास ! सबसे बड़ी बात कि मुझे इस चीज का विश्वास दिलाया कि मैं जो करती हूं उसी को बेहतर करूं ! उनकी सलाह में शब्द भले कम थे पर ये अटल विश्वास जरूर दिला गए कि मैं जो चाहू वो बन सकती हूं ! वक्त तो लगेगा पर सफलता जरूर मिलेगी !

कुछ लोग मिले ऐसे जीवन में जिनसे सीखा बहुत कुछ ! जीवन में कितनी बार मिले छांव, धूप ! कदम डगमगा के संभल गए ! वक्त के साथ हम थोड़ा निखर गए !!

6.

परिवार का सहयोग

परिवार वो विशाल पेड़ है ! जिसकी छाया हमें संतोष देती है ! परिवार का साथ पेड़ का वो फल है, जो हमें आनन्द से भर देता ! एक ऐसा साथ जिसकी वजह से संभले हर वक्त मेरे हालात !

मेरा जन्म एक संयुक्त ब्राह्मण परिवार में हुआ ! मेरे माँ-पापा और मेरी दो बड़ी बहनें ज्योति और पूनम हैं ! मेरी माँ ने एक चिकित्सक होने के साथ गृहस्थी जीवन को भी खूब संभाला है ! माँ वो होती है जो सिर्फ जानती नहीं सबसे ज्यादा पहचानती भी है ! आखिर माँ होती न वो ! मुझे समझाना, डांटना और प्यार लुटाना वो सब करती है ! और आज मैं जो कुछ भी हूँ ये उनकी विश्वास की डोर है !

पापा वो होते हैं जो ऑफिस से घर संभालते हैं ! पापा का सपना यही कि उनकी बेटियाँ आत्मनिर्भर बनें ! उनकी ज़िन्दगी भर की कमाई है हमारी पढ़ाई ! और विश्वास कि उनकी तीनों बेटों बहुत काबिल हैं !

मेरी ज़िन्दगी की प्रेरणा बनकर आयी मेरी बड़ी बहनें ! मेरी सबसे बड़ी दी जिनसे बचपन से हजारों चीजें सीखीं ! उनकी समझदारी, मेहनत और विश्वास ! ये बनाता रहा उन्हें हमेशा खास ! मेरी दोनों बहनों ने मेरा हाथ हमेशा थामा ! उनका प्यार हमेशा बेमिसाल रहा !

बचपन की हर कहानी से मेरे हर सफर तक मेरी ढाल बनी रहीं ! घर की हर दीवारों को हम बहनों ने अपनेपन से रंगा ! सबसे छोटे होने का फायदा मुझे सबसे ज्यादा मिला ! तकरार और प्यार के मेल से हमारे रिश्तों में एक प्यारी सी मिठास और एक-दूसरे के लिए अटल विश्वास !

मेरे हर फैसले पर मेरे परिवार ने मेरा हाथ थामे रखा फिर परिस्थितियाँ कैसी भी हों ! सब होगा सही ये विश्वास मुझे हर पल दिखा !

7.

मेरी पहली नौकरी का संघर्ष

हाथों में डिग्री और आँखों में अपनी पहली नौकरी का सपना लिए, मैं दिल्ली शहर की सड़कों पर ! ज़िन्दगी के पड़ाव में हमें संघर्ष का तो सामना करना ही है ! एक दौर ऐसा जहाँ सुकून तो नौकरी से मिलेगा ! पर नौकरी कैसे मिले ये समझ नहीं आ रहा था ! मेरा पहला interview बेहद खराब ! उस वक्त मेरे लिए मुश्किल था कि ये क्यों हुआ ! ये सवाल खुद से भी हुआ ! पर शायद कहीं न कहीं गलत चीजों को चुन लिया ! ऊपर वाला वो तो नहीं करता जो हमें पसंद है ! वो जरूर करता जो हमारे लिए सही हो ! तो इसलिये जिस नौकरी के लिए मैं नहीं बनी थी, वो मुझे नहीं मिली ! पर वक्त ही कुछ ऐसा था

सवालियों का घेरा हर तरफ से मेरे मन में प्रहार करता ! और भी लगता कि अब बस बहुत हुआ कोई भी नौकरी मिल जाये ! जब हम डिप्रेशन में होते तो आपके आस पास के लोग समझ ज़ाते पर आप या तो समझ नहीं पा रहे होते या समझना नहीं चाहते हो ! और पता नहीं चलता कि ये कब हावी हो गया ! और इन सबके बीच एक राय ! तू technician है ना तो कोई और काम क्यों ! देख अपने अन्दर के विश्वास को खो मत ! थोड़ा वक्त लगता है, पर सफलता भी मिलती है ! तू डर छोड़ क्योंकि जब तक डरेगी तब तक आगे

संघर्ष ही सफलता है ! | 27

का रास्ता नहीं देख पायेगी ! और फिर कुछ ऐसा हुआ कि मुझे दिल्ली छोड़ना पड़ा ! जिस हवा में ताजगी महसूस हो रही थी ! वो हवा भी मेरे चेहरे की उदासी को हटा न पा रही थी !

तो लोगों की सीख, खट्टी-मीठी यादों के साथ ! किसी बहुत खास दोस्त से भरायी गयी slam book के साथ मेरी गाड़ी कानपुर स्टेशन पर !! वो शहर जो मेरे लिए अज्ञान नहीं था ! तो अगली शाम एक फ़ोन कॉल दिल्ली से मेरी नौकरी के लिए ! पर अब इतनी जल्दी लौटना मुमकिन नहीं था ! और इतनी सारी परेशानी का एक असर आपके स्वास्थ्य पे पड़ता तो उसे ठीक करना अब पहले ज़रूरी है !

15 दिन बीत जाने के बाद कानों में एक आवाज की गूँज सुनायी पड़ी ! हो गया जोश ठंडा ! ऐसे तुझे technician बनना है ! जो पैसे तेरी पढ़ाई पे लगाये गए वो तो अब बर्बाद हो गए ! मानो इन सवालों का एक जवाब कि अब कुछ भी हो पीछे नहीं हटना ! अब फिर से चलना है ! हाथों में cv की files के साथ हर pathology में मेरे चक्कर लगने लगे ! और ठीक 15 दिन बाद मेरी पहली नौकरी ने दस्तक दी ! ज़हां का अनुभव अलग और सीख नयी थी ! एक सीख जो मुझे जिन्दगी से मिली कि महज कुछ असफलता हमारा रास्ता नहीं रोक सकती ! असफलता से घबराना मत ! रास्ते पे चलते जाना ! और एक दिन ऐसा अवश्य आयेगा जब तुम्हें सफलता मिलेगी !

प्रिय fresher ये कहानी आप सबके लिए ! संघर्ष आपको जीवन के हर पड़ाव में मिलेगा ! पर आप घबराना मत ! क्योंकि आज नहीं तो कल सफलता आपके हाथ ज़रूर लगेगी ! ज़रूरत है आपके विश्वास की ! क्योंकि जहाँ संघर्ष है वहाँ सफलता है !!

8.

मेरी लेखनी का पहला प्रकाश - सौरव गांगुली

बहुत छोटी सी उम्र थी उस वक्त मेरी ! उस वक्त घर के सभी लोगों को क्रिकेट का शौकीन देखा ! तो सबके साथ मेरी नजरें भी tv से लग ही जाती थी ! फिर एक सवाल ये कप्तान क्या होता ! तो कुछ ऐसे समझाया गया कि जैसे हमारी क्लास में सबसे समझदार बच्चे को क्लास का monitor बनाया जाता है ! ठीक वैसे ही जिम्मेदार खिलाड़ी को उसकी टीम का कप्तान बनाया जाता है !

महज 8 वर्ष की उम्र मेरी ! और उस वक्त इंडियन टीम के कप्तान सौरव गांगुली ! और मैं उस छोटी सी उम्र में उनकी फैन हो गयी ! सन् 2008 में दादा की विदाई पे मेरी कलम चल पड़ी ! वैसे जितना हमारे tv के news चैनल में दिखाया गया ! मैंने पहली बार अपने शब्दों से एक खिलाड़ी, एक कप्तान को कागज पे निखारने की छोटी सी कोशिश की !

"एक ऐसा इंसान जिसने अपने विश्वास से अपने विश्वास से भारतीय टीम को आत्मनिर्भर व स्वावलम्बी बनने की प्रेरणा दी ! जब वह उगा तो उसने अपने दीपक से प्रकाश को भर

दिया ! पूरे देश को जगमग ज्योति कर दिया ! जिसने अपनी ज़िद से पूरी भारतीय टीम की तस्वीर को बदल कर रख दिया ! हमारी भारतीय टीम जिस भी शिखर पे है ! कहीं न कहीं उसकी नींव रखने वाला वही है ! कहते हैं "नींव की ईंट जितनी मजबूत होती है ! हमारी दीवार भी उतनी ही मजबूत होती है "

उसके सामने कई बार मुश्किलें आयीं पर वो डरा नहीं क्योंकि "डरने से नैय्या पार नहीं होती, कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती" सुख और दुख हर किसी के जीवन का हिस्सा होता है" ज़िन्दगी की यही रीत है, हार के बाद ही जीत है" !

सौरव गांगुली का जन्म कलकत्ता शहर में 8 जुलाई 1977 को हुआ ! बाएं हाथ से क्रिकेट खेलने के कारण ये बंगाल में प्रसिद्ध हुए ! इन्होंने अपने बड़े भाई स्नेहाधीश के साथ मिलकर घर पर विकेट बना लिया ! इनके पिता चन्डीदास गांगुली एक बिजनेसमैन और स्टेट लेवल पर क्रिकेट खेला करते थे !

सौरव गांगुली फुटबाल के शौकीन थे ! पर जैसे इनकी नजरें क्रिकेट पे पड़ी ! उस खेल को उन्होंने अपना सपना बना लिया ! सन् 1993 में भारतीय क्रिकेट टीम में शामिल तो हुए पर खेलने के लिए तीन साल का इंतजार करना पड़ा ! सन् 1996 में उनकी शुरुआत एक शतकीय पारी के साथ हुई ! सन् 1999 में भारतीय टीम को गहरा आघात लगा, तब टीम की कमान इन्होंने संभाली !

जीत की नयी राह दिखायी ! नए खिलाड़ी को टीम में जगह मिली ! जिसकी वजह से भारतीय टीम 2003 वर्ल्डकप के फाइनल तक पहुंच पायी ! भले हम फाइनल न जीत पाये ! पर उस वक्त फाइनल तक पहुंचना भी बहुत बड़ी बात है ! लेकिन कहते हैं न बुरा वक्त बता कर नहीं आता ! कोच ग्रेग चैपल के आते ही टीम में बड़े बदलाव होने लगे ! दादा की कप्तानी तो दूर उनको टीम में भी जगह नहीं मिली !

उन्होंने रणजी और छोटे टूर्नामेंट को खेलकर अपने खेल को और निखास्ते गए ! 2006 में एक बेमिसाल वापसी की ! सन् 2008 में एक सम्मानजनक विदाई ली ! धोनी ने कुछ पल कप्तानी के दादा को दिये ! आज के समय में वो bcci प्रेसीडेंट हैं !

सीख : जब भी परिस्थितियां खुद के खिलाफ लगें ! तब हार न मानकर खुद को और बेहतर बनाया जाये ! ये प्रयास होना चाहिए !

9.

डर-एक भय की कहानी

डर का रिश्ता बचपन से ही मिल जाता ! ये भूत प्रेत की कहानी से पनपता हुआ दीवारों की छिपकली तक जा पहुंचता है ! बचपन के डर मासूम होते हैं ! पर मुसीबत तब होती है जब हमारे साथ हमारे डर भी बड़े होते हैं और कहीं ना कहीं हमारा वो अटूट हिस्सा होते हैं जिनके साथ जीना सीख लेते हैं !! समझौता कर लेते हैं !! नौकरी मिलने से पहचान बनाने तक डर ज़िन्दगी का एक रूप बन चुका है !! ये जो आपके विश्वास को खोखला कर रहा है !! डर भूतकाल की घटना से शुरू भविष्य काल की चिंता पे अटकते हैं !!

ऐसा ही डर जो मेरे जन्म के साथ ही जन्मा है !! कुछ चीजें जन्म से हमें मिली पर डर का रूप कब ले लिया पता नहीं चला !! मेरे हाथों का कांपना जिसे अक्सर डर का नाम पाया गया !! वो डर जो कभी बोर्ड पे चाक् चलाते समय तो स्कूल की उस भीड़ में माइक पे बोलते समय झलक जाता है !! कई बार कई ऐसी बातें जिसे मैं अनसुना करके गुजरती वो बातें देखो इस लड़की के हाथ कितने कांपते हैं !! मैं सफर में बढ़ती हुई और ये मुझसे रुबरु होती हुई !! कॉलेज की लैब में हो, या फिर किसी गरम चीज को हाथ लगाने में ! उजाला सही तो कर रही हो फिर डर क्यों रही हो ! पर एक दिन एक presentation में मेरे हाथ बिलकुल नहीं कांपे ! मेरे सारे दोस्त मेरी तारीफें करते हुए ! पहली बार लगा कि मैं इस डर को अपने विश्वास से हरा सकती हूं ! पर मेरा और मेरे डर का संघर्ष खत्म नहीं हुआ ! तो एक फैसला वक्त के साथ लिया ! कि मैं अपने सपनों को नहीं भूल सकती ! तानो का सिलसिला रुका नहीं, पर जो ताने मार रहे वो

तारीफें भी करने लगे ! सब ने अलग-अलग तरीके से परिभाषा दी ! पर मैं मेहनत करूं ये हौसला भी दिया ! मैंने हार नहीं मानी ! क्योंकि हमारी मानसिकता सकारात्मक है, तो हम अपनी राह बना सकते हैं ! डर से मैंने एक जंग छेड़ दी ! मेरी पहचान मेरा काम है ! तो लोगों की बातें चलती रही ! पर मेहनत मेरी रंग लायी !

विश्वास ने मन में ऐसी जगह बना ली कि डर चाह कर भी मन में घर नहीं कर पाया !

कई बार ऐसी परिस्थितियां आती हैं कि डर और विश्वास आपस में टकराते हैं ! डर आपको रोकना चाहेगा ! विश्वास आपको चलना सिखायेगा ! ज़िन्दगी में डर, बीमारी महज कुछ रुकावटें हैं ! पर आपका हौसला आपकी सफलता है ! जहाँ चाह है वहाँ राह है ! डर पे जीत पाना एक बुराई पे अच्छाई की जीत है !

10.

जूता चुराई की अनोखी रसम

चोरी करना गलत बात है ! बचपन में न जाने कितनी बार हमें ये सीख दी गयी ! पर बचपन से हमारे घर की शादी में होने वाली एक रसम काफी सुनी, वो है जुता चुराई !

दुल्हन की छोटी बहनें दूल्हे के जूते चुराती हैं ! और जूते वापसी का भी खर्च लिया जाता है ! हम आपके हैं कौन में तो इस रसम को बखूबी निभाया गया !

हाँ तो जब मैं छोटी थी ! और शादी में खाना पीना सो जाना बाकी सुबह देख लेंगे! घर में बड़ी बहनें थीं तो बिन मेहनत के थोड़ा बहुत हिस्सा मिल जाता ! तो जब अपनी बड़ी बहनों की शादी आयी ! घर की बाकी ज़िम्मेदारी भी साथ ये ज़िम्मेदारी भी मिली ! पर अब ज़माने की बदलती तस्वीर दूल्हे भी शादी में दो जोड़ी जूतों के साथ आते हैं ! मतलब जूते नहीं मिले तो कोई बात नहीं ! और बड़ी दी की शादी में बिन कहे मिल गया !

अब क्या बताये वो भी जूता चुराई जहाँ कोई नोक झोक न हो ! अब बिन मांगे सब मिला तो न ही जूते की बोली कहाँ लगा पाते !! वैसे हमें शादी में हिन्दी मूवी की तरह तड़का चाहिए ! खुश हूँ काफी कुछ मिला जूता चुराई में !

मंझली दी की शादी जिसमें ये खास भूमिका मुझे निभानी थी ! तो खाना पीना खत्म हुआ और शादी की रसमें चालू हुई ! एक नज़र मेरी शादी की रसमों पर दूसरी नज़र जीजा जी के जूते पर ! और वहाँ उनके बड़े भाई की नजरें जूते पे टिकी हुई थी ! एक मन उठाते हैं ! थोड़ा रुक जाते थोड़ा इधर उधर जाये फिर आराम से उठाते हैं ! फिर मैं अपनी सबसे बड़ी बहन से थोड़े धीमी स्वर में

क्या करें ये तो कहीं जा नहीं रहे हैं ! और वहाँ मुझे हिम्मत देती और मैं जूते को उठाकर तेजी से भागती ! उनके बड़े भाई अरे कहाँ ले गयी जूते ! और उसे बक्से के ताले के अन्दर बन्द किया ! अब क्या पता बाहर रहे और कब गायब हो जाये ! और फिर आराम से मैं रसमों का मज़ा लेते हुए ! अब सुबह का सूरज उग भी गया और इस बार भी ज्यादा भी मिला पर रोमांचक हो गया !

वैसे सच बोलूँ तो ये एक प्यारी सी रसम है ! जिसमें पूरी शादी में अलग आनन्द बना रहता है ! जहाँ दूल्हे के घर वाले जूते की निगरानी को जिम्मेदारी मानकर रखवाली करते ! तो वहीं दुल्हन के भाई-बहन बड़ी चालाकी से जूते को गायब कर देते हैं ! जो अलग-अलग परिवारों की प्यारी सी तक़रार होती है ! वो अलग ही एक मिठास का रंग घोलती है !!



11.

बहन की विदाई

बचपन में साथ में लड़ते-झगड़ते, खेलते खेलते वक्त के साथ कब इतने बड़े हो गए पता नहीं चला ! बहन की शादी और बहन की विदाई का मंजर सामने आ गया !

दी को उनके सपनों का राजकुमार मिला, तो मैं खुश तो बहुत थी ! अब शादी की तैयारी चालू हो गई ! और काम भी कितने सारे होते शादी में ! और छोटे भाई-बहन को ज़िम्मेदारी की एक लम्बी सी सूची मिल जाती है ! इन ज़िम्मेदारी को निभाने का आनन्द ही अलग होता है ! उस मजे के बीच एक सजा जो शायद दिल में होती है पर चेहरे पे उसकी रेखा नहीं दिखाई पड़ती है ! वैसे बचपन में बात-बात पर एक-दूसरे को रुलाने वाले भाई-बहन कब इतने समझदार बन जाते पता नहीं चलता ! क्योंकि ऐसे दी के आंसू हर रसम के साथ गहरे थे तो अगर आंसू हमारी आँखों से छलका तो दी को कैसे चुप करायेंगे !

तो हल्दी के उबटन में मेरी प्यारी बहन का चेहरा और उनकी खूबसूरती पे चार चाँद लगा हो ! पर उस खूबसूरती के बीच आँखों की नमी नहीं छुपा पा रही दी !

फिर हाथों में मेहंदी साजन के नाम की ! संगीतों की गूंज

घर के आंगन में ! मेहंदी है रचने वाली, हाथों में गहरी लाली ! सब झूमे, चाची, बुआ, भाभी और दीदी सबके ठुमको ने महफिल सजा दी ! घड़ी की सुई मानो एक अलग रफ्तार पकड़ी ! मानो कुछ पहरों के बाद विदाई की घड़ी सामने थी ! एक नए घर की तरफ प्यारी सी बहन के कदम बढ़ रहे थे ! मानो घर का हर कोना भी नम हो चला हो ! अब तो सबके हृदय के जज्बात आँखों से झलकने लगे ! एक बेटी की विदाई होती कुछ ऐसी है, हमारे आँखों से बहने वाले पानी में हजारों कहानी छिपी होती ! शब्द मौन होते हैं आंखें बोलती हैं !!

नए सफर की ओर वो बढ़ी, नए आंगन को अपनाने ! सारी रस्समें निभायी गयीं, आप बढ़ चलीं एक नए घर को जाने आंखें छलकी तेरी, चुलबुली प्यारी दी फर्ज और भाव, रहा बहुत रिश्तों से लगाव मैं छोटी बहन आपकी, रोना कहाँ जानती ! हो आपके अरमान पूरे, बस यही मानती !!

12.

आंसू-जज्बातों का बिखरना !

जन्म के समय से जब तक हम बोलना नहीं जानते तो हमारी आँसू की जुबानी हमारी माँ बड़े प्यार से समझ जाती हैं ! बचपन से बड़े होते ही आँसू की जुबानें बदल जाती हैं ! जैसे ज़िन्दगी ये सलीका खुद सिखा देती भीड़ में मत रोना, अपने जज्बातों को हर किसी से बचा न करना !!

मतलब अब दिल है रोने का, तो उसके लिए कोई कोना हो ! ऐसा कोना जहाँ किसी की नजरें आपकी आँखों को पढ़ न पाये ! हाँ तो अपनों के सामने गिरने से इसलिये भी छुपाने होते कि कोई इन आँसू से कमजोर न पड़ जाये ! और अंजानों के सामने ये गिरे तो इसे लोग आपकी कमजोरी समझेंगे !

तो मैंने इस सलीके को सीखने की पूरी कोशिश की ! पर मैं बेखबर थी इस बात से, आँसू जब आँखों में आते तो इन्हें रोकना आसान नहीं होता ! हृदय की पीड़ा, मन की व्यथा पानी के रूप में आँखों से गिरने लग जाती है ! दिल जब दुखता तो अक्सर आँखों से कुछ आँसू निकल पड़ता ! पर आँसू के जुबानी की भी एक कहानी होती है !

बात 13 जुलाई 2018 की ! जहां मैंने अपने काम को ख्याब बनाया ! जब लोगों की बातों का तीर हृदय में कुछ इस तरह से लगा ! वो आँखों में आंसू बनकर बहा !

वो शब्दों का कुछ घाव रोज लग रहा था जिसे मैं अनसुना कर देती ! वो एक दिन नहीं मना पायी मन को !

कुछ चंद दोस्तों की बातों ने दिल पे वार किया ! वैसे बोले बाद में हमने तो मजाक किया था ! कोशिश की मैंने एक कोने सब कुछ समेट के मन की व्यथा को मन में रखने की ! पर एक सर ने मेरी आँखों को पढ़ लिया क्या हुआ जैसे पूछा मेरी आँखों से आंसू निकल गया ! और जब आंसू गिरते तो जुबां से शब्द नहीं निकलते !

मन की पीड़ा जो आँखों में पानी बनकर गिरती है उसे लब्ज नहीं मिला करते ! जो जज्बात मन में वो आंसू के जारिये थोड़ा बिखर जाते हैं !

आंसू भी कीमती मोती हैं ! और अगर वो कहीं गिरे हैं तो उसके दिल के टुकड़े हुए हैं ! आंसू की जुबानी के पीछे हर किसी की अपनी कहानी है !

13.

मेरी लेखनी को निखारने की इच्छा मैं लेखनी को निखारूं, रोज इसे थोड़ा मैं सवारूं !!

ये मेरा एक ऐसा शौक है जो वक्त के साथ छूट गया था ! पर कहते हैं कि जब आप खुद को पाना ही चाहते हो तो अपनी ज़िन्दगी में कुछ छोटे बदलाव कीजिये ! इसके लिए किसी बड़ी आग की जरूरत नहीं, एक छोटी सी चिंगारी काफी है, ज़िन्दगी को सही दिशा देने के लिए ! तो बस छोटी -छोटी लेखनी से मैंने इसकी शुरुआत की ! और जब किसी कार्य को करने के लिए समर्पित हो जाओ तो उसे करना मुश्किल नहीं लगता !! फिर शब्द मिलते गए रचनाएं बनती गयीं ! ईश्वर द्वारा प्रदान की गयी कोई भी कला सिर्फ एक तोहफा नहीं होती ! उस कला को ईश्वर ने एक ज़िम्मेदारी के रूप में हमें सौंपा है ! जितना लिखेंगे उतना सीखेंगे ! अभ्यास ही हमें अपने कार्य में परिपूर्ण बनाता है ! रही बात

विषय की, तो हमारे आस पास ऐसी बहुत चीजें हैं, जिससे क्या लिखना ये मुझे समझ में आता गया !

इसे फिर से शुरू करने के teacher डे से अच्छा मौका क्या हो सकता था ! गुरु की सीख को शब्दों में ढालकर उनके लिए एक छोटे से तोहफे के रूप में प्रस्तुत किया ! मानो सही मायने मेरे लिखने की शुरुआत फिर से हुई ! उसके बाद मेरी कलम कागज पे फिर से रफ्तार पकड़ने लगी ! अपने मन के ख्यालों को मैं कागज पे बड़ी आसानी से उतारने लगी !!

ज़िन्दगी के अद्भुत रस में लेखनी ऐसी सहज कला है ! जिसे हम जितना निखारेगे वो उतना संवरती जायेगी ! लेखनी इतना बढ़िया साधन है कि आप आपने विचारों को जी सकते हैं ! लेखनी शौक से कब आदत बन गयी पता ही नहीं चला ! अपनी कला को सिर्फ पहचानना ही काफी नहीं है ! उससे अपनी पहचान बनाना भी ज़रूरी है ! मेरी ज़िन्दगी का सुखमय अनुभव मुझे मेरी लेखनी से मिला !

ज़िन्दगी की अलग-अलग सीख को, संघर्ष के बाद मिले छोटे से सुकून को मैंने अपनी लेखनी से सजाया !

और हर दिन मेरी लेखनी मुझे सिखाती है ! मेरी सीख मेरी लेखनी में नज़र आती है !!

14.

एक शहीद की आवाज

हम अपने घरों में शांति से रह सकें, वो हमारे लिए तैनात सीमा रेखा पर हमारी रक्षा कर रहा है ! और वो भी हमारी तरह किसी का बेटा, भाई और पति है ! और उसे ये बताया गया कि तुम एक सैनिक हो ! तुम्हारे लिए बस एक फर्ज है देश की रक्षा करना ! अपने वतन के लिए मर मिटना !!

14 फरवरी 2019 का वो दिन, पूरी दुनिया उस प्यारे से दिन में अपने प्यार को बयां कर रही थी ! वहीं पुलवामा में युद्ध चलने लगे ! हमारे सैनिक विरोधी का सामने करने लगे ! और शहीद होते मानो कुछ आवाजें उनके दिल से जो निकली :

थक गया हूं माँ, बस सोना चाहता हूं ! अब मिल जाए तेरी गोद, जी भर के रोना चाहता हूं !! मेरे वतन की मिट्टी तुझसे लिपट जाऊं मैं, बयां अपना हर दर्द कर लूं !!

बहन : तू सोच रही जब मिलूंगा तुझसे, तो खूब लड़ेगी तू मुझसे !! राखी की थाल पे , रहेगा मेरा इंतजार तुझे !

पर जैसे ही घड़ी की सुई बढ़ रही, मेरी सांसें अब छूट रही ! तो मेरी प्रिय बहन मेरे लहू को देखकर तू मत रोना तू एक बहादुर भाई की बहन है !!

माँ : दरवाजे पे खड़े होकर, तू आज भी मेरी राह देख रही होगी ! मुझे माफ कर देना माँ, अब नहीं लौट पाऊंगा !! माँ याद है कैसे तू बचपन में वीरों की कहानी सुनाती थी, देश के लिए हमारे हर फर्ज को समझाती थी ! माँ आज तेरे बेटे ने वो फर्ज निभा है दिया !!

मेरी प्रिये : क्या बोलूँ तुझसे मैं, तुझसे अलग होने की बातें तो शायद सपने में भी न सोच पाऊँ ! मैं वही तेरे पास ! तेरी आँखों की नमी नहीं सही जायेगी मुझसे !! और पूरे घर को तुझे ही संभालना है !! मेरी प्यारी सी लाडली को मेरा प्यार देना, उसके जीवन को निखार देना !!

मेरा वतन आबाद रहे ! एक शहीद का दिल यही चाहता ! एक रिश्ता अपने वतन से कई बार निभाया ! और उस फर्ज को निभाने के लिए खुद को ही भुलाया !

15.

कुछ महत्वपूर्ण बातें

- * आपके जीवन में संघर्ष आते ही रहेंगे ! और जैसे ही हम किसी संघर्ष को पार करेंगे, आप सफलता के और करीब आयेंगे !
- * कोई भी बीमारी, या विपरीत परिस्थितियां आपके हौसले को कम नहीं कर सकतीं ! आपको हरा नहीं सकती ! हमेशा सकारात्मक रहिये !!
- * लोग आप से क्या चाहते हैं, इससे ज़रूरी ये है कि आप खुद से क्या चाहते हो !! लाखों दिलों में घर क्यों न बना लो लौट के अपने ही घर जाना है, तुम कौन हो इस बात का उत्तर तुम्हें ही देना ! खुद को तुम्हें ही पहचानना है !!
- * मुश्किलें कितनी भी आये ज़िन्दगी में, तुम्हें नहीं घबराना है ! ज़िन्दगी इम्तिहान तो लेती है, पर वो नयी सीख नया अनुभव भी तो देती है !

* सपने को अगर ज़िन्दगी की हकीकत बनाना, तुम्हें अपनी मांजिल को पाना है, तो उसका रास्ता भी तुम्हें ही बनाना है ! ज़िन्दगी में छोटे-छोटे लक्ष्य बनाइये और उसे पूरा कीजिये ! और धीरे-धीरे करके आप मांजिल तक खुद ही पहुंच जायेंगे !

* रिश्ते ये बहुत कीमती धागे हैं प्रेम के, रिश्ते बनाना बहुत आसान सा लगता ज़िन्दगी में, तो एक कोशिश रिश्ते को निभाने की भी होनी चाहिए !

* जो अपेक्षा हमारे मन में जन्मी है, उसकी उम्मीदें हम दूसरों से लगाते हैं ! जबकी दूसरे को इसका पता नहीं होता तो ये विचार ही व्यर्थ है !

* बहस करना छोड़ें ! जब किसी को सुनना ही न हो आपकी ! तो आपका कुछ भी बोलना व्यर्थ है !!

* शब्द का उपयोग सोच-समझ करें ! गर जुबां को अगर इतनी आजादी नहीं होती, तो आज लब्जों की इतनी बार्बादी ना होती ! जब आप क्रोध में हों तो शब्दों का ध्यान दीजिये !!

16.

लिखना - मेरी चाहत

लिखना, मेरी एक ऐसी चाहत है !
जिनसे मिली मुझे सपनों की आहट है !!

मेरी लेखनी एक आजाद हवा का झोंका है !
मैंने इसे चाहने से खुद को कभी नहीं रोका है !!

जब मुश्किल लगा सफर !
संभाली इसने मेरी डगर !!

जब भी लगा कुछ नहीं साथ !
थामा था इसने तब मेरा हाथ !!

कैसे कहूं मैं इसका कमाल !
हर वक्त बनी मेरी ये ढाल !!

बचपन से था जो इससे प्यार !
रहेगा ये सारी उम्र बेकरार !!

फूलों के खुशबू सी महक इसकी !
खिलते से बच्चों की चहक इसकी !!

रात की चांदनी भी बोल पड़ती !
मेरे दिल के राज, कागज में खोल पड़ती !!

लिखना एक ऐसी चाहत है !!

17.

बेटियां

मन में उमंग खुशी की लहर छा जाती है !
जब घर में एक प्यारी सी बेटा आ जाती है !!

पापा की राजकुमारी, माँ की परछायी होती है !
फिर क्यों एक दिन उस घर से परायी होती है !!

भाई-बहनों में इनके झगड़े के हैं क्या कहने !
पर हर भाई जानता है, कितनी प्यारी होती बहनें !!

फर्ज तो इन्हें कदम-कदम पर निभाने होते हैं !
कैसे कहूँ ! इनके कितने रिश्ते बेगाने होते हैं !!

घर की रीनक, खर्च का हिसाब रखती है !
खूब शौक रखने वाली, कम में मान जाती है !!

ये बेटियां ! साहब एक घर को रोशनी
देकर दूसरे घरों में जाती हैं !!

18.

माँ

माँ मेरा जहाँ तूने ही बनाया है
तेरी वजह से इस दुनिया में आया !
बिन कहे भूख को मिटाया
मेरे रोने पे गले से तूने लगाया !
हर रिश्ते को तूने बतलाया है
माँ मेरा जहाँ तूने बनाया है !!

ममता की आँचल में तूने सुलाया
मेरी खुशी देखी चेहरा तेरा खिलखिलाया !
प्यार भरे हाथों से जो खाना खिलाया
तेरे होने से मैंने खुद का वजूद पाया !
मेरे रोने से दिल तेरा हर बार भर आया
माँ मेरा जहाँ तूने बनाया है !!

हुए जब बड़े, सही गलत का भेद बतलाया
मैं बनूँ कामयाब इसलिये दुखों को छुपाया !
मैं कहूँ भी क्या, लिख सकूँ इस काबिल बनाया !
मुझे दी तूने हर आजादी, तेरी वजह से आ पाया
माँ मेरा जहाँ तूने ही बनाया है !!

19.

मेरा आईना

आर-पार की सच्चाई को दिखा जाता है !
ये मेरी कमी को थोड़ा गिना जाता है !!

नाजुक सी परत इसकी
मुझ जैसा कोई नज़र आता

मेरा आईना, मेरे चेहरे की सच्चाई
थी मैंने बहुत बार लब्जों से छुपाई !
वो ये बोल जाता है
राज खोल जाता है !!

खो गया ये लोगों की भीड़ में,
मोबाइल से दिखने वाली तस्वीर में
मेरा आईना !!

20.

ज़िन्दगी एक किताब

ये ज़िन्दगी एक किताब है !
छुपे इसमें कई राज हैं !!

आओ पलटे पन्ने किताब के !
समझें इसे हम थोड़ा पास से !!

कई कहानी रची हैं !
कई लेखनी छुपी हैं !!

कहानी में किरदार हैं कई !
हर किरदार की कहानी नयी !!

हाँ इस कहानी में युद्ध हैं कई !
हर युद्ध के बाद जीत है नयी !!

ये ज़िन्दगी एक किताब है !
छुपे इसमें कई राज हैं !!

21

स्त्री : एक रचना !!

साड़ी के लिबास में, या सादे से सूट में !
जंचती हो तुम मुझे, हर एक रूप में !!

अपने हाथों से घर को महकाती हो !
दफ्तर भी सही वक्त पे पहुंच जाती हो !!

आंसू को छुपाकर, तुम मुस्कुराती हो !
ऐसे ही प्यार तुम, परिवार पे लुटाती हो !!

दर्द को सहती, कुछ ना कहती !
ममता के आँचल से गले तुम लगाती हो !
मिर्चों को वार कर, दिये में जलाती हो !
बेटे को बुरी नजर से तुम बचाती हो !!

पूरे बाजार में सबसे अच्छी राखी चुनकर लाती हो !
भाई की कलायी को रेशम के धागे से सजाती हो !
भाई हो सफल, हर रोज ईश्वर से ये मनाती हो !!

माथे की बिन्दी, चूड़ी की खनक !
मांग में जब तुम सिन्दूर लगाती हो !
पति की लम्बी आयु के लिए भूखी रह जाती हो !!

माँ, बहन, बेटी, पत्नी बनकर घर को स्वर्ग बनाती है !
वो खुद में बुलंद, तो आत्मनिर्भर भी बन जाती है !

स्त्री तुम जंचती हो, हर एक रूप में !!

22.

आवाजों के जंगल में

आवाजों के जंगल में,
एक आवाज तेरी है !
मेरे कानों में दे सुनायी,
मन हुआ मेरा हार्षित !
उस आवाज की गूंज
फूलों के खिलखिलाने
पक्षियों के चहचहाने,
मेरे मुस्कुराने के
आवाज जैसी प्रतीत हुई
आवाजों के जंगल में
एक आवाज तेरी
एक आवाज मेरी !!

23.

कागज और कलम

लेखक की हर एक बात !
कवि की वो अधूरी रात !!

एक कागज पे दिख जाती !
कलम की नोक टिक जाती !!

कागज और कलम ज़िन्दगी के वो किस्से !
जिनसे बांटे न जाने मैंने कितने ही हिस्से !!

सिखाया कागज और कलम ने बहुत कुछ !
मैंने इसे बताया अपने हिस्से का हर दुख !!

मैंने इससे कुछ ऐसा रिश्ता बनाया !
कागज और कलम को करीब पाया !!

24.

कविता के साज से सजी मैं !

कविता के साज से सजी मैं
कभी फूलों को देखकर खिली,
कभी कुछ मुझाँवे से हूँ डरी,
कविता के साज से सजी मैं !!

शब्दों की थोड़ी हेरा फेरी
समझ न पाये अल्फाजों को !
चले थे जो विचार मन में,
बदल गए एहसासों को !!

सब कुछ देखकर मन सोचे
शब्द भी जब थोड़े बहुत रुठे !
कलम को मनाना होगा,
लेख को लिखते जाना है !!

रचना हर दिन रची ज़ाती है
भावों में छुपी,
एहसासों में दिखी,
कविता बन ज़ाती है !!

कविता के साज से सजी मैं !!

25-रिश्ते

मोती से धागे को पिरोया !
वैसे मैंने रिश्तों को सजोया !!

जन्म से पहले ही
रिश्ता जुड़ गया बहुतों के साथ !
कुछ रिश्ते मिले मुझे
प्यारे से वक्त के हाथ !!
रिश्तों के अलग-अलग नाम
मिली उनसे अलग-अलग पहचान !
माँ-पापा, बहन-भाई
रिश्ते ही मेरी सच्ची कमायी !!
बुना मैंने इसे अपनेपन से
निभावा है मुझे !!
